9

लिए था।

दर्शन मित्र

(3) New subject matter

कई तरीकों से नारीवादी समाजिक विश्लेषण की विषय वस्तु के विशेष क्षेत्रों को विस्तार जा सकता है। जबकि स्त्रियों के बारे में शोध नया नहीं है पर वह शोध अनेक अनुभवों के न तरीके से किया गया ताकि वह अपने आपको और दुनिया को अनेक इतिहास को बताया देती है को बेहतर तरीके से समझ सके। जेंडर का अध्ययन भी नया नहीं है पर, जैविकी का पुरुषत्व व स्त्रीत्व के निर्माण पर नियंत्रण गया है। नारीवादी अनुसंधान दूसरी अन्तर्निहित प्रक्रियाओं को इकट्ठा करते है और अपने आपके के बारे में अध्ययन (studying up instead of studying down) की महत्ता बताती है। उदाहरण अध्ययनकर यह देखना है कि कम वेतन में भी कर्मचारियों को कैसे खुश रखा जाए पर अध्ययन (power and pay) ऐसी स्टडी मुश्किल ही करते हैं कि कैसे अत्याचार को कम रोकि और पावर में खुश रखा जाए। अगर हम यह जानना चाहते है कि हमारे रोजमर्रा के अनुभव अपने वर्तमान स्वरूप में कैसे आए, तो समाजिक सत्ता के प्रोसेस की जांच करनी होगी।

बेस्ट फेमिनिस्ट विश्लेषण विषय-वस्तु के इन बदलावों से आगे और आगे चली जाती है जब वह इस बात पर जोर देते हैं कि शोधकर्ता को भी समीक्षात्मक स्तर पर रखना चाहिए जिस तरह विषय-वस्तु को रखा जाता है इस तरह पूरी शोध प्रक्रिया को ही समीक्षा में जाती है इस तरह

12
दर्शन मित्र

और स्कॉलरली साइंटिफिक फायदों के अलावा यह पुरुषों की स्वयं की और समीक्षात्मक नजरिया एक राजनैतिक सहयोग की तरह सामने आता है जो स्त्री मुक्ति में मदद करता है। जैसे की नारीवादी कहते हैं कि सारे मुद्दे नारीवाद से जुड़े हुए हैं इसलिए यह कहना गलत होगा ~~कि~~ समाजशास्त्र में अनुसंधान सिर्फ ~~स्त्रियों~~ स्त्रियों के हाथ में दे दिया गया।

~~Social condition, economic condition, religious condition~~ - ~~impact~~ ...from India
~~History, present day prevalence.~~

(12) (11)

ईस्टर अपने लेख के अंत में आगाह करती हैं कि ऊपर दिए विश्लेषण के आधार पर दो गलत अनुमान निकाले जाते हैं, उन्हें उनसे बचना चाहिए। कई बार यह दोषपूर्ण तरीके से सोच लिया जाता है कि पुरुष अनुभव के बजाय स्त्री अनुभव को व्यवहारिक और सैद्धांतिक रिसोर्स के रूप में प्रयोग (empirical and theoretical resources) करने के कारण नारीवाद एक तरह से सापेक्षवादी (relativist) है। पर यह सही नहीं है क्योंकि ऊपर दी गई व्याख्या में दिखाया गया है स्त्री और पुरुष दोनों ही के अनुभव समान रूप से विश्वसनीय स्रोत नहीं हैं जिनसे पूर्ण और सही सामाजिक बोध प्राप्त किया जा सके।

दूसरा दोष जो कई लोग निकालते हैं वह यह कि पुरुष नारीवादी स्कॉलरशिप में महत्वपूर्ण भागीदारी नहीं निभा सकता। पर यह आक्षेप भी सही नहीं है क्योंकि नारीवादी इतिहास में कुछ पुरुष हुए हैं जिनके योगदान की अनदेखी नहीं किया जा सकता जैसे - जॉन स्टुअर्ट मिल, कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स। दूसरी ओर कई आंदोलन में उन लोगों की भागीदारी ज्यादा रही है जहां वह खुद उन समस्याओं से पीड़ित नहीं थे जिनके खिलाफ उन्होंने आवाज़ उठाई। यह भी जरूर है कि पीड़ित व्यक्ति उन समस्याओं का बखान अपने अनुभवों के आधार पर कर उनका बलपूर्वक विरोध करता है। वहीं अगर नारीवादी आंदोलनों के संदर्भ में देखें तो पुरुष की जिसका प्रभुत्व स्त्री पर था वह पुरुष मानसिकता, उनकी पर्चियों का हिस्सा था जिनसे महिलाएं अंजान थी। इस तरह वह समस्या की जड़ की समझ रखता है और उसे खत्म करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

दर्शन मित्र

(10)

वर्ग, नस्ल, रंग, संस्कृति, जेंडर / लिंग आधारित पूर्वधारणाओं शोधकर्ता के विश्वास और व्यवहार को भी उसी ढांचे में रखा जाता है जिसे वह रंगता है। शोधकर्ता के व्यक्तिगत बिलिफ और बिहेवियर एम्पीरीकल एविडेंसेज का हिस्सा होते हैं जो शोध परिणाम को प्रभावित करते हैं। इस व्यक्तिक पहलु को शोध में ले आने से उसकी वस्तुनिष्ठता कम होने की बजाय बढ़ ही जाती है। इस तरह का ज्ञाता और ज्ञेय के बीच के संबंध को 'रिफ्लेक्सिविटी ऑफ सोशल साइंस' हेडिंग के तहत वर्णित किया जाता है।

जैसा हार्डिंग अपने तर्क का सार निकाले हुए कहती है कि ये तीन लक्षण हैं — ना कि नारीवादी प्रविधि (method) — जो बेस्ट न्यु फेमिनिस्ट रिसर्च और स्कॉलरशिप का कारण है। इन लक्षणों को प्रक्रियात्मक लक्षण (methodological features) भी समझा जा सकता है क्योंकि ये सिखाते हैं कि किस तरह वैज्ञानिक सिद्धांत का जनरल स्ट्रक्चर स्त्री और जेंडर रिसर्च पर लागू करें। इन्हे ज्ञान मीमांसा संबंधी लक्षण भी कहा जा सकता है क्योंकि ये उन ज्ञान संबंधी सिद्धांत को सामने लाते हैं जो पारम्परिक सिद्धांतो से अलग है। इस तरह साफ तौर पर नारीवादी शोध परिणामों की विशिष्टता, नारीवादीयों द्वारा प्रचलित सिद्धांतों और पारम्परिक परिकल्पनाओं को दी गई चुनौतियों की वजह से है।

8 दर्शन मित्र

और वैज्ञानिक के रूप में पहचान विरोध में होता है।
और शोषित वर्ग जिन प्रश्नों के उत्तर पाना चाहता है वे कभी भी प्योर ट्रुथ (Pure Truth) / अंतरिम सत्य की खोज की मांग नहीं करते, पर उद्देश्य ये जानना होता है कि स्थिति को कैसे बदला जा सकता है; किन बलों के प्रभाव से उनकी दुनिया वैसी है?, कैसे उन बलों से जीता, उन्हें हराया या खत्म किया जा सकता है जो उनकी मुक्ति, विकास और बढ़ोतरी के खिलाफ है। परिणामस्वरूप मूल रूप से नारीवादी शोध किसी पुराने "औरतों के अनुभवों" पर आधारित ना होकर उनके राजनैतिक जद्दोजहद के अनुभवों पर आधारित होता है। केट मिलेट रिमाइंड कराती है कि किचन, बेडरूम भी उतना ही राजनैतिक संघर्ष का हिस्सा है जितना बोर्ड रूम तथा पोलिंग प्लेस। इन संघर्षों के आधार पर ही कोई अपने आपको और सामाजिक जीवन को समझ सकता है।

(2) new purposes

अगर इस नजरिये से शोध करना शुरू किया जाए कि स्त्री-अनुभव में क्या जटिल / समस्यात्मक लगता है तो स्त्री दृष्टिकोण से रिसर्च 'वूमन के लिए' हो जाएगा। अब इस कार्य का उद्देश्य है कि सामाजिक घटनाओं का वर्णन करना है जो उनकी जरूरतें और इच्छाओं के लिए जरूरी है। पुरुष स्त्री संबंधित जिन प्रश्नों के उत्तर पाना चाहते हैं वे वहीं तक सीमित हैं जिससे वे स्त्री पर अपना नियंत्रण और प्रभुत्व बढ़ा सके और औरतों को मैनिपुलेट कर सके। परंपरागत समाजशास्त्र पुरुष के लिंग विरुद्ध अपने इस लक्ष्य में रहा ...

7
दर्शन मित्र

① नए वास्तविक व सैद्धांतिक रिसोर्स — औरतों के अपने अनुभव (women's experience)
② सामाजिक विज्ञान का नया उद्देश्य — औरतों के लिए (new purposes)
③ खोज की नई विषय-वस्तु — शोधकर्ता को उसी खांके में रखना जिसने विषय वस्तु को दिखाया गया हो (new subject-matter of enquiry)

(1) Women's experiences

आलोचक तर्क देते हैं कि परंपरागत ~~[illegible]~~ समाज शास्त्री अपना विश्लेषण पुरुष अनुभवों के आधार पर करते हैं। वह सिर्फ इन्हीं प्रश्नों को पूछते हैं जो पुरुष अनुभव से समस्या नजर आते हैं। पर दूसरी ओर कई घटनाएं जो पुरुषों की नजर में समस्या हो सकती हैं वह स्त्री-अनुभव में समस्या नहीं भी हो सकती। स्त्री-अनुभव को सामाजिक विश्लेषण के प्रयोग करने से ~~[illegible]~~ विभिन्न क्षेत्रों की सामाजिक संरचना - शिक्षा, प्रयोगशाला, जर्नल, शैक्षिक संस्थाएं, फंडिंग ~~[illegible]~~ एजंसीज और सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ेगा। यह ध्यान देने योग्य बात है कि स्त्रीयों के अनुभव बहुवचन में हैं जो नए रिसोर्स का काम करता है। औरतें अलग-2 वर्ग, नस्ल, संस्कृति से होने के कारण कोई एक अनुभव नहीं है पर अलग-अलग औरतों के अनुभव हैं। सिर्फ जेंडर अनुभव ही संस्कृति के अनुसार अलग नहीं है पर एक ही व्यक्ति के अनुभव में कई बार विरोधी होते हैं। सैंड्रा कहती है कि उनका एक माँ के रूप में और प्रोफेसर के रूप में अनुभव कई बार परस्पर विरोध में होता है। स्त्री-वैज्ञानिक कई बार कहती हैं कि उनका स्त्री के रूप में और